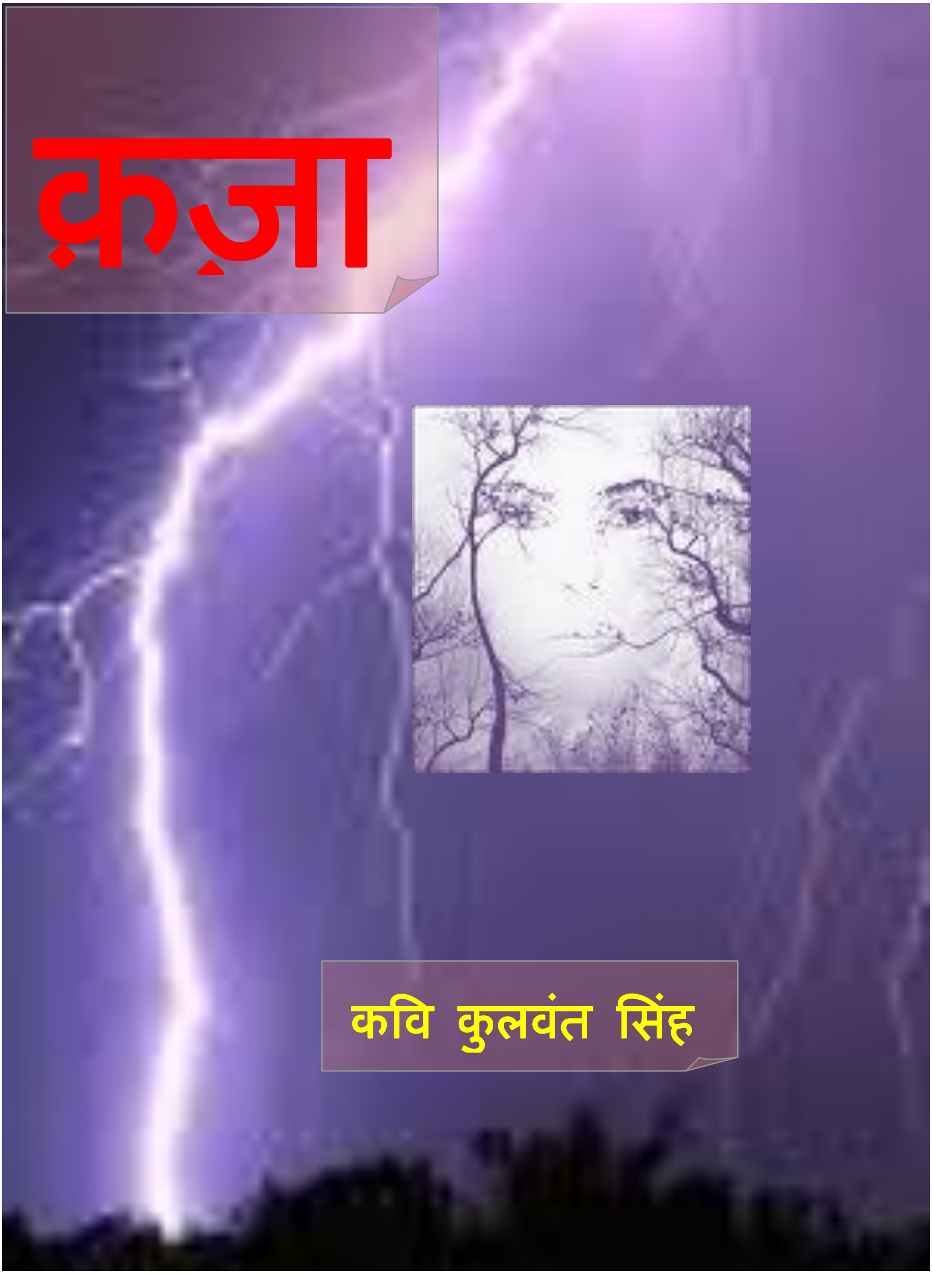
क़ज़ा
कवि कुलवंत सिंह

# क़ज़ा

## (ग़ज़ल संग्रह एवं अन्य)

कवि कुलवंत सिंह

# कवि परिचय

## कुलवंत सिंह

@ सर्वाधिकार सुरक्षित

रचनाकार : कवि कुलवंत सिंह

संस्करण : इंटरनेट 2010

मूल्य : नि:शुल्क वितरण

(व्यवसायिक उपयोग के लिये नही)

प्रकाशक : कुलवंत सिंह

KAZA (Ghazal Sangrah) By : KULWANT SINGH

# दान

इस पुस्तक के लिए अथवा सेवा भावना हेतु यदि आप धन अथवा श्रम दान देना चाहें तो कृपया निम्न संस्था को सीधे संपर्क करें। **'ग्वालियर चिल्ड्रेन हास्पिटल चैरिटी**' द्वारा '**स्नेहालय**' एवं '**ग्वालियर हेल्थ एण्ड एजुकेशन सोसाइटी**' तथा '**ग्वालियर हास्पिटल एण्ड एजुकेशन चैरिटेबल ट्रस्ट**' के सहयोग से चलाए जा रहे अभिनव महती सहायता कार्यों की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है।

http://www.gwalior.hospital.care4free.net/Gwalior_Childrens_Hospital.html
http://www.gwalior.hospital.care4free.net/snehalaya_the_home_with_love.html
www.helpchildrenofindia.org.uk
Gwalior.Hospital@care4free.net

# परिचय : कवि कुलवंत सिंह

**जन्म : 11 जनवरी, रूड़की, उत्तरांचल**

**प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा : करनैलगंज गोंडा (उ.प्र.)**

**उच्च शिक्षा : अभियांत्रिकी, आई. आई.टी., रूड़की**
**(रजत पदक एवं 3 अन्य पदक)**

**पुस्तकें प्रकाशित : 1- निकुंज (काव्य संग्रह)**
**2 - परमाणु एवं विकास (अनुवाद)**
**3 - विज्ञान प्रश्न मंच**
**4 - कण क्षेपण (प्रकाशनाधीन)**
**5 - चिरंतन (काव्य संग्रह)**
**6 - हवा नूं गीत (निकुंज का गुजराती अनुवाद)**
**7 – शहीद-ए-आज़म भगत सिंह (खण्ड काव्य)**

**रचनाएं प्रकाशित** : साहित्यिक पत्रिकाओं, परमाणु ऊर्जा विभाग, राजभाषा विभाग, केंद्र सरकार की विभिन्न गृह पत्रिकाओं, वैज्ञानिक, विज्ञान, आविष्कार, अंतरजाल पत्रिकाओं में अनेक साहित्यिक, वैज्ञानिक रचनाएं

**पुरस्कृत** : काव्य, लेख, विज्ञान लेखों, एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरूस्कृत, विभागीय हिंदी सेवाओं के लिए राजभाषा गौरव सम्मान

**सेवाएं** :'हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद' से 15 वर्षों से संबंधित
व्यवस्थापक **'वैज्ञानिक' त्रैमासिक पत्रिका**
विज्ञान प्रश्न मंचों का परमाणु ऊर्जा विभाग एवं अन्य संस्थानों के लिए अखिल भारत स्तर पर आयोजन
**क्विज मास्टर**
**कवि सम्मेलनो मे काव्य पाठ**

**संप्रति** : वैज्ञानिक अधिकारी,पदार्थ संसाधन, प्रभाग, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई - 400085

निवास : 2 डी, बद्रीनाथ, अणुशक्तिनगर, मुंबई - 400094

**फोन : 022-25595378 (O) / 09819173477 (R)**

**ईमेल** : kavi.kulwant@gmail.com / singhkw@barc.gov.in

**नेट** : www.kavikulwant.blogspot.com
www.kulwant.mumbaipoets.com

# अनुक्रमणिका

## ग़ज़लें


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | बंदा था मैं खुदा का | ...................... | 8 |
| 2. | भरम पाला था मैने | ...................... | 9 |
| 3. | यकीं किस पर करूँ | ...................... | 10 |
| 4. | तप कर गमों की आग में | ..................... | 11 |
| 5. | हम उसूलों की तरह | ...................... | 12 |
| 6. | प्यार से दुनिया को सारी | ...................... | 13 |
| 7. | शैदाई समझ कर | ...................... | 14 |
| 8. | चुभा कांटा | ...................... | 15 |
| 9. | दावत बुला के | ...................... | 16 |
| 10. | गमों को जीत | ...................... | 17 |
| 11. | गोद में रख सर | ...................... | 18 |
| 12. | गुमान था कि मेरे सर पे | ...................... | 19 |
| 13. | जिंदगी तो उलझनों का | ...................... | 20 |
| 14. | देख कर लोग मुझे | ...................... | 21 |
| 15. | गलती कबूलता जो | ...................... | 22 |
| 16. | अश्कों से पिरोई है | ...................... | 23 |
| 17. | धन की चाहत में | ...................... | 24 |
| 18. | कबूलता हूँ मैं | ...................... | 25 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 19. | लाश बन कर मैं भला | ...................... | 26 |
| 20. | मेघ बन कर | ...................... | 27 |
| 21. | नहीं है सांझ अपनी | ...................... | 28 |
| 22. | बड़े हम जैसे होते हैं | ...................... | 29 |
| 23. | इतना भी ज़ब्त मत कर | ...................... | 30 |
| 24. | जब से गई है माँ | ...................... | 31 |
| 25. | प्यार का इजहार करके | ...................... | 32 |
| 26. | लबों पे ये हल्की सी | ...................... | 33 |
| 27. | रात तन्हा थी | ...................... | 34 |
| 28. | मेरी दवा की | ...................... | 35 |
| 29. | याद बन कर मेरे दिल में | ..................... | 36 |
| 30. | छेड़ कर दिल के तराने | ...................... | 37 |
| 31. | मुफ़लिसी में | ...................... | 38 |
| 32. | रात की आँखों में | ...................... | 39 |
| 33. | चाँद सूरज आसमाँ | ...................... | 40 |
| 34. | खेल कुर्सी का | ...................... | 41 |
| 35. | देश में है अब जरूरत | ...................... | 43 |
| 36. | दंभ हो दिल में | ...................... | 44 |
| 37. | दीन दुनिया धर्म का | ...................... | 45 |
| 38. | मिली मुझे दुनिया सारी | ...................... | 46 |
| 39. | मै जब भी | ...................... | 47 |

40. याद मौला को करें ........................ 48
41. अल्ला के दर पे ........................ 49
42. खुद को भुला ........................ 50
43. जब से तेरी रोशनी ........................ 51


## तरही ग़ज़लें


44. प्यार भले कितना ही कर लो .................. 52
45. ये क्या हुआ मुझे ........................ 54
46. कभी इकरार चुटकी में ........................ 55
47. दर्द औ दुख से ........................ 57
48. किसको है संत्रास ........................ 58
50. नज़्म ........................ 59
51. दोहे - धरम के ........................ 61
52. दोहे - सामाजिक ........................ 64
53. मुक्तक ........................ 67
54. हाइकु ........................ 68
55. माहिए ........................ 71
56. समीक्षाएँ ........................ 83

बंदा था मैं खुदा का, आदिम मुझे बनाया,
इंसानियत ने मेरी मुजरिम मुझे बनाया ।

माँगी सदा दुआ है, दुश्मन को भी खुशी दे,
हैवानियत दिखा के ज़ालिम मुझे बनाया ।

दिल में जिसे बसाया, की प्यार से ही सेवा,
झाँका जो उसके अंदर, खादिम मुझे बनाया ।

है शर्मनाक हरकत अपनों से की जो उसने,
कैसे बयां करूँ मैं, नादिम मुझे बनाया ।

रब ने मुझे सिखाया सबको गले लगाना,
सच को सदा जिताऊँ हातिम मुझे बनाया ।

नादिम = शर्मसार

भरम पाला था मैने प्यार दो तो प्यार मिलता है ।
यहाँ मतलब के सब मारे न सच्चा यार मिलता है ।

लुटा दो जां भले अपनी न छोड़ें खून पी लेंगे,
जिसे देखो छुपा के हाथ में हथियार मिलता है ।

बहा लो देखकर आँसू न जग में पोंछता कोई,
दिखा दो अश्क दुनिया को तो बस धिक्कार मिलता है ।

नहीं मै चाहता दुनिया मुझे अब थोड़ा जीने दो,
मिटाकर खुद को देखो तो भी बस अंगार मिलता है ।

मै पागल हूँ जो दुनिया में सभी को अपना कहता हूँ,
खफ़ा यह मुझसे हैं उनका मुझे दीदार मिलता है ।

मुखौटा देख लो पहना यहाँ हर आदमी नकली
डराना दूसरे को हो सदा तैयार मिलता है ।

यकीं किस पर करूँ मै आइना भी झूठ कहता है।
दिखाता उल्टे को सीधा व सीधा उल्टा लगता है ॥

दिये हैं जख्म उसने इतने गहरे भर न पाएंगे,
भरोसा उठ गया अब आदमी हैवान दिखता है ।

शिकायत करते हैं तारे जमीं पर आके अब मुझसे,
है मुश्किल देखना इंसां को नंगा नाच करता है ।

वजह है दोस्ती और दुश्मनी की अब तो बस पैसा,
जरूरत पड़ने पर यह दोस्त भी अपने बदलता है ।

है बदले में वही पाता जो इसने था कभी बोया,
इसे जब सह नही पाता अकेले में सुबकता है ।

भले कितनी गुलाटी मार ले चालाक बन इंसां
न हो मरजी खुदा की तब तलक पानी ही भरता है ।

बने हैं पत्थरों के शहर जब से काट कर जंगल,
हकीकत देख लो इंसान से इंसान डरता है .

तप कर गमों की आग में कुंदन बने हैं हम .
खुशबू उड़ा रहा दिल चंदन सने हैं हम .

रब का पयाम ले कर अंबर पे छा गए,
बरसा रहे खुशी जग बादल घने हैं हम .

सच की पकड़ के बाँह ही चलते रहे सदा,
दुश्मन बने हजार हैं फिर भी तने हैं हम .

छुप कर करो न घात रे बाली नहीं हूँ मैं,
हमला करो कि अस्त्र बिना सामने हैं हम .

खोये किसी की याद में मदहोश है किया,
छेड़ो न साज़ दिल के हुए अनमने हैं हम .

हम उसूलों की तरह रिश्ते निभाते ही रहे.
गाज़ बन कर हम पे वह बिजली गिराते ही रहे.

हम उन्हे अपना समझ दिल में बसाते ही रहे
मानकर दुश्मन वो हमको तो सताते ही रहे.

चुप थे हम इज्जत कभी उनकी न मिट्टी में मिले
जान कर कमजोर वह हमको डराते ही रहे.

हो गईं बेकार सारी कोशिशें अच्छाई की
रात दिन वह विष पे विष हमको पिलाते ही रहे.

उनकी राहों में सदा हमने बिखेरे फूल थे
फूल को पत्थर समझ आँखे दिखाते ही रहे.

रात सन्नाते में चाकू घोंपकर सीने हमारे
सामने सबके हमें अपना बताते ही रहे.

खेल खेला वह नियति ने दी सजा पापी को उसने
मान कर हमको नियति बरसों जलाते ही रहे.

प्यार से दुनिया को सारी जीतना मैं चाहता था .
बांटने अपनों को खुशियां हारना मैं चाहता था .

कत्ल कर के पूछता है, खूँ हुआ, कातिल है कौन,
भर के गुस्से में उसे तब मारना मैं चाहता था .

सच किया जाहिर वो मैने सोच भी सकता न कोई,
रूह कांपे, सुन के सच वो, बोलना मैं चाहता था .

रूबरू सच से हुआ कातिल भी जाकर छुप गया,
न्याय को अब किस तराजू तोलना मैं चाहता था .

करके आँखें बंद मैं तो वार खुद सहता रहा,
कौन है अपना यहां यह देखना मैं चाहता था .

वार पर ही वार कितने उसने हम पर हैं किये,
जब्त की दीवार को तब तोड़ना मैं चाहता था .

ए खुदा इंसाफ तेरा है, मुझे तो देखना,
चुप हूँ मैं वरना उसे कब, छोड़ना मैं चाहता था .

शैदाई समझ कर जिसे था दिल में बसाया ।
कातिल था वही उसने मेरा कत्ल कराया ॥

दुनिया को दिखाने जो चला दर्द मैं अपने,
घर घर में दिखा मुझको तो दुख दर्द का साया ।

किसको मैं सुनाऊँ ये तो मुश्किल है फसाना
दुश्मन था वही मैने जिसे भाई बनाया ।

मैं कांप रहा हूँ कि वो किस फन से डसेगा,
फिर आज है उसने मुझसे प्यार जताया ।

आकाश में उड़ता था मैं परवाज़ थी ऊँची,
पर नोंच मेरे उसने जमीं पर है गिराया ।

गीतों में मेरे जिसने कभी खुद को था देखा,
आवाज मेरी सुन के भी अनजान बताया ।

कांधे पे चढ़ा के उसे मंजिल थी दिखाई,
मंजिल पे पहुँच उसने मुझे मार गिराया ।

**शैदाई= चाहने वाला, पर = पंख, परवाज = उड़ान**

चुभा कांटा चमन का फूल माली ने जला डाला।
बना हैवान पौधा खींच जड़ से ही सुखा डाला।।

चला मैं राह सच की हर बशर मेरा बना दुश्मन
जो रहता था सदा दिल में जहर उसने पिला डाला।

बड़ी हसरत से उल्फ़त का दिया हमने जलाया था
उसे काफ़िर हवा ने एक झटके में बुझा डाला।

सताया डर कि दौलत बँट न जाए पैसे वालों को
थे खुश हम खा के रूखी, छीन उसको भी सता डाला।

उजाड़े घर हैं कितने उसने पा ताकत को शैतां से
बसाने घर कुँवर का अपनी बेटी को गला डाला

दावत बुला के धोखे से है काट सिर दिया .
हैवां का जी भरा न तो फिर ढ़ा कहर दिया .

दुनिया की कोई हस्ती शिकन इक न दे सकी,
अपनों ने उसको घोंप छुरा टुकड़े कर दिया .

कण-कण बिखर गया जो किया वार पीठ पर,
खुद को रहा समेट कहाँ तोड़ धर दिया .

अंडों को खाता साँप ये हैं उसकी आदतें,
बच्चे को नर ने खा सच को मात कर दिया .

इंसां गिरा है इतना रहा झूठ सच बना,
पैसा बना ईमान, वही घर में भर दिया .

होली जला के रिश्तों की नंगा है नाचता,
बन कंस खेल बदतर वह खेल फिर दिया .

गमों को जीत मैं आँसू छुपाता .
खुशी के गीत हूँ हर पल सुनाता .

किया है खून मेरा तो उसी ने,
जिसे था मैं कभी अपना बताता .

हुआ मुश्किल है लेना सांस भी अब,
हवा में ज़हर देखो वह मिलाता .

किसे दूँ दोष यह गलती मेरी ही,
सभी को क्यों मैं हूँ अपना बनाता .

जिसे दर्जा दिया मैने पिता का,
वही था आग में मुझको जलाता .

जिसे अपना समझ दिल में बिठाया,
मजे लेकर कलेजा भून खाता .

बनाये क्यूँ भला हैवान उसने,
मजे क्या खेल के लेता विधाता .

गोद में रख सर मैं जिसकी सो रहा था .
विष वही मेरे बदन में बो रहा था .

मैने अपना प्यार जिस रिश्ते को सौंपा,
मार जिंदा अब मुझे वह ढ़ो रहा था .

वह बना हैवान जिस दौलत की खातिर,
अब उसी दौलत में दब कर रो रहा था .

कब्र मेरी चुपके से उसने बनाई,
मैं उसे अपना समझ कर सो रहा था .

मैने अपनी जां लड़ा जिसको बचाया,
मेरा खूँ कर हाथ अब वह धो रहा था .

गुमान था कि मेरे सर पे उसका साया है .
उसी ने ज़हर मुझे बाप बन पिलाया है .

चला हूं सच पे सदा, कायनात है शाहिद,
सज़ा दे दे के किसी ने बहुत रुलाया है .

किये थे प्यार में वादे कभी जवानी में,
उन्हीं की याद में महबूब ने सताया है .

जिसे मैं खोज रहा था, भटक के दर दर पे,
पता चला कि वो तो मुझमें ही समाया है .

बना है लोभ में हैवां, जो कभी था इंसां,
पड़ा जो लोभ में अपनों को भी गवाया है .

खुशी मैं बांट रहा था, बसा के दिल में जिन्हें,
उन्ही को छोड़ सभी ने मुझे हंसाया है .

दिलों में प्यार का जज्बा जगाने जब मैं चला,
पिघलते मोम सा हर दिल को मैने पाया है .

शाहिद = गवाह

जिंदगी तो उलझनों का, इक बड़ा सा जाल है,
साथ सच के अब यहां, जीना हुआ बेहाल है .

खेल देखो झूठ सच का, जग में कब से चल रहा,
झूठ ने पाई बुलंदी, सच हुआ कंगाल है .

डोलती हैं कश्तियां अब तो किनारे पर खड़ी,
डर रही हैं देख तूफां, भूली अपनी चाल है .

जां हथेली पर ले चलना, है नही करतब नया,
दूसरों की जां ले लेना ही नया सुरताल है .

मैं बसाता दिल में अपने अजनबी कोई मिले,
अब यही बर्ताव मेरा बन गया जंजाल है .

स्टेनगन नेता हैं रखते, अपनी रक्षा के लिये,
ईश का बस नाम ही मेरे लिये तो ढ़ाल है .

संत देखो मस्त रहता, नाम भगवन ले सदा,
डर सताता दुष्ट को हर पल कि आया काल है .

देख कर लोग मुझे रश्क किया करते हैं .
क्या पता उनको छुपे गम मुझमें रहते हैं .

जी लिया है लगता जिंदगी ने हमको बहुत,
हर घड़ी अब तो इसे हम बोझ समझ सहते हैं .

जिसको भी अपना समझ दिल में बसाया हमने,
चेहरा खुद का दिखाने से भी वह डरते हैं .

जिंदगी में पी लिए, दर्द हैं इतने हमने
देख कर दर्द हमें, हमसे तो अब डरते हैं

रात दिन अपनों की खातिर हैं बहाए आँसू,
अब तो आंखों से दो आंसू भी नहीं बहते हैं .

घाव दे दे के किया उसने है छलनी हमको,
शान से फिर भी हमें अपना ही वह कहते हैं .

राम हर युग में नही होते हैं पैदा लेकिन,
हर गली कूचे में रावण तो यहां रहते हैं .

गलती कबूलता जो, कहते उसे हैं इंसां .
गलती पे जो न शर्मिंदा हो, वही है हैवां .

मैं आसमां में उड़ता, पक्षी नहीं था कोई,
मेरे नदीम ने क्यों मेरी निकाली फिर जां .

पीते रहे लहू वह, चूसा नसों को मेरी,
समझा न चाल उनकी, इतना मैं क्यों था नादां .

कुछ बात तो है उसकी चाहत में मेरे रब्बा,
बल देख मेरी पेशानी होती वह परेशां .

पूरी कीं ख्वाइशें सारी, मेरी तुमने अल्ला,
तड़पा नही मुझे अब, बस एक ही है अरमां .

अश्कों से पिरोई है तबस्सुम की ये माला .
हंसता हूँ सदा जब से गले इसको है डाला .

मुद्दत हुई ठोकर को ही तकदीर है समझा,
हर रोज नये जख्म को सीने में है पाला .

करते हैं इबादत जो कभी वज्द में आकर,
ले उनकी चरण धूल बनूं किस्मत वाला .

बेटा है मुझे कह के किसी माँ ने पुकारा,
सोये अरमानों का छलकने लगा प्याला .

नाराज़ हुये ऐसे खता भी न बताई,
नाकाम हो के इश्क में निकला है दीवाला .

बाज़ार में जब जिस्म की उसने की नुमाइश,
तब जा के मिला उसके दो बच्चों को निवाला .

घी, दूध कहीं पर है, कहीं भूख तड़पती,
दुनिया में भला खेल है कैसा ये निराला .

वज्द = आत्मविस्मृति (आनंद अतिरेक में)

धन की चाहत में हुआ है आज अंधा आदमी .
तन पे कपड़े डालकर दिखता है नंगा आदमी .

शर्म से नज़रें झुका हैवान देखो जा रहा,
जीव दुनिया में न कोई, जितना गंदा आदमी .

भूल कर अपना पराया, यह बदलता रंग है,
देख लो कितने ही रंगों में है रंगा आदमी .

ढूंढ लो शम-आ जला कर सारी दुनिया में भला,
अब न दिखता कोई भी, दुनिया में चंगा आदमी .

आदमी मरघट बना, ज़ज़्बात हैं सब मर गये,
ठौर बतलाओ जहाँ मिलता है जिंदा आदमी .

कबूलता हूँ मैं वह ज़ुर्म जो किया ही नहीं .
लहूलुहान हुआ हूँ मैं, बस मरा ही नहीं .

खुली किताब की माफ़िक थी ज़िंदगी मेरी,
वो शख्स जो इसे पढ़ता, मुझे मिला ही नही .

ये कैसी जिद थी मेरी, सच मुझे बताना है,
कई दफा मैं मरा हूँ, जैसे जिया ही नही .

कभी किसी ने न सोचा, है सच बहुत कड़वा,
सभी ने सुन के जताया, जैसे सुना ही नही .

किये हैं रात के अंधेरों में जो पाप तूने,
तुझे लगा कि किसी को कभी दिखा ही नही .

अनेक दर्द सहे मैने, फिर भी चुप ही रहा,
हिसाब मैने तो रिश्तों में कुछ रखा ही नही .

लाश बन कर मैं अभी तक जी रहा कैसे भला .
उसके हाथों विष मैं इतना पी रहा कैसे भला .

बाप ने बेटी का रिश्ता चिंदी चिंदी कर दिया,
मैं अभी तक चिंदियों को सी रहा कैसे भला .

बाप का अपराध सुन कर कांपने क़ाज़ी लगा,
कर न पाया न्याय वह क़ाज़ी रहा से भला .

छोड़ कर तूफां में कश्ती जो चला माझी गया,
डूबती कश्ती थी वह माझी रहा कैसे भला .

फूल खिलकर अड़ गया, माली से नज़रें फेरकर,
रौंद डाले फूल खुद माली रहा कैसे भला .

मेघ बनकर मैं खुशी घर-घर में जब बरसा रहा था .
कोई मेरा अपना ही तब घर मेरा जलवा रहा था .

आसमाँ को छूने जब मैने भरी ऊँची उड़ान,
मेरी धरती को वो मेरे नीचे से खिसका रहा था .

उसको अपना मान कर जब मैं मिला उसके गले,
घाव मेरे छीलकर वह दर्द से तड़पा रहा था .

जब उसे मालुम हुआ, है प्यार मजबूरी मेरी,
प्यार उसका पाने को पल पल मुझे तरसा रहा था .

छुप के ढ़ेरों पाप जो, उसने अंधेरों में किये,
भेद खुल जाने के डर से अपनों को मरवा रहा था .

जिंदगी की दौड़ में, उससे न आगे कोई हो,
राह में पत्थर अड़ा लोगों को वह गिरवा रहा था .

खून कर जब वह हटा तो भीड़ में फिर घुस गया,
उस पे शक पैदा न हो वह डुगडुगी पिटवा रहा था

नहीं है सांझ अपनी औ सवेरा ।
न आया रास मुझको शहर तेरा ॥

वहां पूरा मुहल्ला घर था अपना,
यहां इक रूम का कोना है मेरा ।

वहाँ कस्बे में था आंगन लगा घर,
यहाँ सूरज न ही है चांद मेरा ।

यहाँ बसते हैं लगता चील कौवे,
हमेशा नोंचते हैं मांस मेरा ।

हुई है खत्म लगता जात आदम,
बना हर घर यहाँ भूतों का डेरा ।

जिधर देखो उधर हैवान दिखते,
कहाँ खोजूँ मैं इंसां का बसेरा ।

गुजारा हो नहीं सकता यहां पर,
मुझे लगता नही यह शहर मेरा ।

बड़े हम जैसे होते हैं तो रिश्ता हर जकड़ता है ।
यहां बनकर भी अपना क्यूँ भला कोई बिछड़ता है।।

सिमट कर आ गये हैं सब सितारे मेरी झोली में,
कहा मुश्किल हुआ संग चांद अब वह तो अकड़ता है।

छुपा कान्हा यहीं मै देखती यमुना किनारे पर,
कहीं चुपके से आकर, हाथ मेरा अब पकड़ता है।

घटा छायी है सावन की पिया तुम अब तो आ जाओ,
हुआ मुश्किल है रहना, अब बदन सारा जकड़ता है।

जिसे सौंपा था मैने हुश्न अपना मान कर सब कुछ,
वही दिन रात देखो हाय अब मुझसे झगड़ता है।

बने हैं पत्थरों के शहर जब से काट कर जंगल,
हकीकत देख लो इंसान से इंसान डरता है।

इतना भी ज़ब्त मत कर आँसू न सूख जाएँ.
दिल में छुपा न ग़म हर आँसू न सूख जाएँ.

कोई नहीं जो समझे दुनिया में तुमको अपना,
रब को बसा ले अंदर, आँसू न सूख जाएँ.

अहसास मर न जाएँ, हैवान बन न जाऊँ,
दो अश्क हैं समंदर, आँसू न सूख जाएँ.

मंजर है खूब भारी अपनों ने विष पिलाया,
देवों से गुफ़्तगू कर, आँसू न सूख जाएँ.

कैसे जहाँ बचे यह, आँसू की है न कीमत,
दुनिया बचा ले रोकर, आँसू न सूख जाएँ.

जब से गई है माँ मेरी रोया नहीं .
बोझिल हैं पलकें फिर भी मैं सोया नहीं .

ऐसा नहीं आँखे मेरी नम हुई न हों,
आँचल नहीं था पास फिर रोया नहीं .

साया उठा है माँ का मेरे सर से जब,
सपनों की दुनिया में कभी खोया नहीं .

यादें न मिट जाएं मेरे दिल से कहीं,
बीतें हैं बरसों मन कभी धोया नहीं .

चाहत है दुनिया में सभी कुछ पाने की,
पायेगा तूँ कैसे वो जो बोया नहीं .

प्यार का इजहार करके क्यूँ चले जाते हैं लोग।
कैसे जी पाते हैं वह हम तो लगा लेते हैं रोग॥

चांद तारों को मैं जब भी देखता हूं साथ साथ,
यार मेरा लगता लौटेगा मिटाकर अब वियोग।

कैसे भूलूँ उन पलों को साथ जो हमने बिताए,
रब की धरती पर मिला आशीष था कैसा सुयोग,

आ गले से लग ही जाओ, चंद सांसे ही बची हैं,
दो मुझे जीवन नया, अपना मिटा लो तुम भी सोग।

याद तुमको गर नहीं हम, था जताया प्यार तुमने,
जिंदगी में तुम किसी के, अब न करना यह प्रयोग।

लबों पे ये हल्की सी लाली जो छायी ।
हमारी है लगता तुम्हें याद आयी ॥

ख़ुदा ने नवाज़ा करम से है हमको,
हमारी इबादत है उसको तो भायी ।

हथेली पे सच रख मै चलता हूँ लेकर,
न भाती जहां को ये सच से सगाई ।

ज़मीं है भरी पापियों के कदम से,
कहाँ है ख़ुदा जिसने दुनिया बनाई ।

बशर हर यहाँ बोल मीठा ही चाहे,
भले चाशनी में हो लिपटी बुराई ।

हमें कह के अपना न तुम यूँ सताओ
चले जाते तुम हमको आती रुलाई ।

गिरे शाख से फूल जब कोई टूटे,
जुड़े कैसे कुलवंत जग हो हंसाई ।

रात तन्हा थी न तुम दिन को सज़ा-ए-मौत दो .
पास आ जाओ न तुम मुझको सज़ा-ए-मौत दो .

इश्क में तेरी अदाओं ने मुझे कैदी किया,
हुस्न-ए-जलवों से न अब मुझको सज़ा-ए-मौत दो .

हम तो तेरे थे सदा फिर चाल तूने क्या चली,
दूर कर सबको न तुम मुझको सज़ा-ए-मौत दो .

रात काली छा गई हर ओर बरबादी हुई,
है नहीं गलती न तुम उसको सज़ा-ए-मौत दो .

दूरियां दिल में नहीं हैं, दूर क्यों हम फिर हुए,
सुन मुझे रोता न तुम खुद को सज़ा-ए-मौत दो .

मेरी दवा की कड़वाहट तुम जरा पी लेना .
तुम अपनी जिंदगी की कटुता मुझे दे देना .

वादा किया है निभायेंगे साथ उम्र भर का,
सुख बांटो यां न बांटो, दुख तेरे मेरा गहना .

अन्याय घोर है जब, करता किसी पे हैवां,
फटता है आसमां तब, दुनिया को पड़ता सहना .

किस्सा बना यह घर घर, भाई से छीने भाई,
जितना है कम वह लगता, क्यों कुछ किसी ने पहना .

धन की हवश है कितनी, आदम बना है शैतां,
अब है नहीं सुहाता, कोई उसे भी अपना .

तारे जमीं पे लाओ, दुनिया हंसी बनाओ,
सब कुछ बिखर गया है, फिर से सजाओ सपना .

हिम बन चढ़ो शिकर पर, यां मेघ बन के छाओ,
रखना है याद तुमको, सागर में तुमको मिलना .

याद बन कर मेरे दिल में आज फिर तू छा गई ।
बन के आंसू आज इन आंखों को मेरी भा गई ।।

बालपन से सुन रहा हूं सच सदा है जीतता,
आज लगता मेरी सच्चाई ही मुझको खा गई ।

जिसके कदमों में कभी, मैने निसारी अपनी जां,
उसकी ही करतूत से अब मेरी शामत आ गई ।

जिंदगी है खूबसूरत, रंग इसमें बेपनाह,
अपनी पर जब आई यह तो कहर मुझ पर ढा गई ।

माँ के आँचल से लिपट आँसू बहाता गम के था,
मेरी दुनिया लुट गई तब जब मेरी अम्मा गई .

मै हथेली रेत भर कर, खुश हुआ सब मिल गया,
छीनने को वो भी मुझसे, सारी दुनिया आ गई ।

फूल बन कर जिंदगी थी खिलखिलाना चाहती,
खिल न पाई जिंदगी और दर्द सारा पा गई ।

छेड़ कर दिल के तराने, है भुलाया यार ने .
लीन वह दुनिया में हैं, हमको सताया यार ने .

दो घड़ी के साथ ने, हमको बनाया आपका,
उम्र भर तन्हाई है, कितना रुलाया यार ने .

कितने ही बीते हैं मौसम, याद अब आते नहीं,
आस में बैठे हैं हम, हर दिन गिनाया यार ने .

करते वाद वह नही गर, राह हम तकते नही,
पल वह जीने को बहुत जो, संग बिताया यार ने .

याद करता हूँ मैं वह पल, रूह जाती है महक,
कहके दिलबर था गले, अपने लगाया यार ने .

मुफ़लिसी में यार क्यूँ बातें है करता प्यार की .
अब तो उल्फत भी हुई है, चीज इक बाजार की .

ले रहे अंगड़ाईयां दिल में छुपे अरमान जो,
दिल में है तसवीर जो, हसरत है बस दीदार की .

बन के देखो दूसरों का जीने में आता मज़ा,
कोई भी बन जाता अपना, बात बस इसरार की .

हर किसी ने बांट मुझको एक हिस्सा ले लिया,
खुद मैं खुद लगता नही, अब क्या कहूं संसार की .

कह के अपना उसने मुझसे मांग मुझको ही लिया,
पास मेरे अब नहीं कोई वजह इनकार की .

दर्द दिल में जो छुपा है, दिल में ही रखना उसे,
मत उछालो बात को, यह बात है परिवार की .

हम मिले थे किस जनम, मिलते रहेंगे हर जनम,
रब के दर पे दो दिलों की, बात है इकरार की .

रात की आँखों में आंसू आज फिर हैं बह रहे .
टूट कर दो दिल हैं लगता आज फिर दुख सह रहे .

आशिकों को आज फिर से कर रही दुनिया जुदा,
चांद धरती आसमाँ उनकी कहानी कह रहे .

बददुआ निकली तड़प के जब हुए बरबाद दिल,
दौर-ए-महशर देख लो मजबूत घर भी ढ़ह रहे .

कितना समझाया कहीं तूँ और डेरा डाल ले,
मेरा घर अपना समझ कर दुख सदा से रह रहे .

गम नही था आँख मेरी कितने आंसू आ गये,
पोंछने आँसू थे जिनको दर्द देते वह रहे .

**महशर = प्रलय**

चांद सूरज आसमां धरती हवा मिलते सभी को .
आदमी ने जो बनाया, क्यों न मिलता हर किसी को .

राह में कांटे मिले तो जो मुसाफिर डर गया,
वह भला कैसे बताये रास्ता भटके किसी को .

जब मैं खुशियां बांटता था, शख्स हर मिलता गले था,
दासतां सुनने दुखों की, है न फुरसत अब किसी को .

जिंदगी को मैने समझा राह इक सीधी सी है,
जिंदगी को जिसने समझा, जिंदगी जाने उसी को .

मेरी गुरबत ने दिया हक छोड़ जाओ तुम मुझे,
अब है हक मेरा सताऊँ, याद बन कर मैं तुम्ही को .

हो चुके झगड़े बहुत अब नस्ल औ मज़हब के नाम,
आ गया हूँ बांटने अब पुर मुहब्बत मैं सभी को .

भर निगाहें शोखियां, मुझको है छेड़ा जब से उसने,
कौन हूं, आया कहाँ से, पूछो मुझसे अब मुझी को .

खेल कुर्सी का है यार यह,
शव पड़ा बीच बाज़ार यह ।

कैसे जीतेगी भुट्टो भला,
देते हैं पहले ही मार यह ।

नाम लेते हैं आतंक का,
रखते हैं खुद ही तलवार यह ।

रात दिन हैं सियासत करें,
करते बस वोट से प्यार यह ।

भूल कर भी न करना यकीं,
खुद के भी हैं नहीं यार यह ।

दल बदलना हो इनको कभी,
रहते हर पल हैं तैयार यह ।

देख लें घास चारा भी गर,
खूब टपकाते हैं लार यह ।

पेट इनका हो कितना भरा,
सेब खाने को बीमार यह ।

अब करें काम हम अपने सब,
छोड़ बातें हैं बेकार यह ।

देश में है अब जरूरत फिर से लायें इंकलाब .
अपने ही जो रहनुमा हैं, उनपे पायें फतहयाब .

डर मिटा दें जिंदगी से मौत से बदतर नहीं ये,
रोशनी पाने को आओ फिर जलाएँ आफताब .

हर बशर जाने जहाँ में, मुल्क यह जन्नत बना है,
है सजाना हिंद को फिर, खूबसूरत यह खवाब .

कारवां है इक बनाना, सबको इसमें जुटते जाना,
साठ सालों में मिला क्या, आज दें वह यह हिसाब .

खौलते इस खून को क्रांति की ज्वाला बना दें,
सोने की चिड़िया का दें, इस देश को फिर से खिताब .

दंभ हो दिल में तो क्यूँ शंकर मिलेगा .
पाप करता जग में फल कंकर मिलेगा .

छा रहा तम घोर दिन भी रात लगती,
ढूंढने से भी न फिर दिनकर मिलेगा .

बढ़ रहे हैं लोग इस धरती पे कितने,
खाने का सामान अब गिनकर मिलेगा .

यम खड़ा आतंक का, फैला रहा डर,
गोलियां ठां ठां नहीं बंकर मिलेगा .

नेक बंदों को सताता है जो शैतां,
फल कुकर्मों का उसे चुनकर मिलेगा .

कर्म हों अच्छे चले तूं राह सच की,
रब को पाना हो जो तूं प्रण कर मिलेगा .

दीन दुनिया धर्म का अंतर मिटा दे .
जोत इंसानी मोहब्बत की जला दे .

ऐ खुदा बस इतना तूँ मुझ पर रहम कर,
दिल में लोगों के मुझे थोड़ा बसा दे .

दिल में छायी है उदासी आज गहरी,
मुझको इक कुर-आन की आयत सुना दे .

जब भी झाँकू अपने अंदर तुमको पाऊँ,
बाँट लूँ दुख दीन का जज़्बा जगा दे .

रोशनी से तेरी दमके जग ये सारा,
नूर में इसके नहा खुद को भुला दे .

मिली मुझे दुनिया सारी जब मिला मौला .
भुला दूँ मै खुद को नाम की चखा मौला .

गमों से टूट रहा शख्स हर यहां रोता,
भरा दुखों से जहां तुमसे है गिला मौला .

चमन बना सहरा गुल यहां रहे मुर्झा,
बहार यूँ निखरे हर कली खिला मौला .

दिखा चुका अपने खेल खूब वह शैतां,
सदा सदा के लिए अब उसे सुला मौला .

बदी को भूल के इंसा करे मोहब्बत बस,
दिलों में प्रीत की ऐसी अलख जला मौला .

करें सभी हर पल बंदगी खुदा तेरी,
तुझे पा जाने का मौका तो इक दिला मौला .

मैं जब भी हूँ किसी इंसां के करीब जाता ।
अल्लाह तेरा बस तेरा ही वजूद पाता ॥

कितने ही चांद सूरज अंबर में हैं विचरते,
हर कोई ऐसा लगता, चक्कर तेरा लगाता ।

देख जो मैने फूलों को खिलते औ महकते
तेरी ही बंदगी में, यह सर झुका ही जाता ।

देखा जो मैने चिडि़यों को उड़ते औ चहकते,
जर्रा यहां का हर, तेरी याद है दिलाता ।

रख ले मुझे हमेशा अपनी शरण में मौला,
दिल बार बार तुझको आवाज़ है लगाता ।

याद मौला को करें बनती हैं बातें सारी .
सेंकना रोटी नही देख दुखों की सिगरी .

खूब था फक्र हमें अपनी तो खुद्दारी का,
कौड़ियों में न बिका हाट किसी भी नगरी .

मान कर खुद को खुदा चलता अनेकों चालें,
रब का दर भूल के इंसां है चला किस डगरी .

पाप से भर ही गया अब तो घड़ा शैतां का,
हस्र क्या होगा रे जब पाप की फूटे गगरी .

जो भी इज्जत थी कमाई घर के बूढ़ों ने,
लाड़ला घर का सरे आम उछाले पगरी .

अल्ला के दर पे शीश जब, अपना नवा लेते हैं हम .
सारे गमों को भूलकर, खुशियों को पा लेते हैं हम .

परवाज लेती आसमां, मन्नत हजारों पूरी हों,
मिलता सुकूं लेकिन तभी, जब रब को पा लेते हैं हम .

खुद को भुला भगवान को दिल में बसाने के लिए,
इंसां की सेवा को धरम अपना बना लेते हैं हम .

मुश्किल हो कितनी जिंदगी में सच पे चलने के लिए,
इक दीये से भी रात को रोशन बना लेते हैं हम .

जम कर निभाते दुश्मनी, बरसों से हों खामोशियां,
दुश्मन भी गर मांगे क्षमा, सीने लगा लेते हैं हम .

खुद को भुला खुदा को आओ बसा लें दिल में .
नफरत भुला मोहब्बत को हम समा लें दिल में .

मजलूम की ही सेवा मज़हब बना लें अपना,
दुनिया को रोशनी दें, सूरज उगा लें दिल में .

जन्नत बने जहां यह ऐसी अलख जलाएं,
सच की मशाल हम सब, आओ जला लें दिल में .

महके चमन यहां पर, हर फूल को खिलाएं,
उपवन को सींचना है, गंगा बहा लें दिल में .

तारे तो आसमां में, देखो दमक रहे हैं,
आओ गज़ल बना कर इनको सजा लें दिल में .

दुख दर्द को छुपाकर, जो जी रहे हैं इंसां,
कुच दर्द बांट उनके, उनको बिठा लें दिल में .

जीवन की आंधियों में, गिर जाते टूट कर जो,
तूफ़ान छू न पाएं, उनको छुपा लें दिल में .

जब से तेरी रोशनी आ रूह से मेरी मिली है ।
अपने अंदर ही मुझे सौ सौ दफा जन्नत दिखी है ॥

आस क्या है, ख्वाब क्या है, हर तमन्ना छोड़ दी,
जब से नन्ही बूंद उस गहरे समंदर से मिली है ।

प्रात बचपन, दिन जवानी, शाम बूढ़ी सज रही,
खुशनुमा हो हर घड़ी अब शाम भी ढ़लने लगी है ।

गम जुदाई का न करना, चार दिन की जिंदगी,
ठान ली जब मौत ने किसके कहने से टली है ।

गीत गाओ अब मिलन के, है खुशी की यह घड़ी,
यार अपनी सज के डोली अब तो रब के घर चली है ।

प्यार भले कितना ही कर लो, दिल में कौन बसाता है .
मीत बना कर जिसको देखो, उतना ही तड़पाता है .

मेरा दिल आवारा पागल, नगमें प्यार के गाता है,
ठोकर कितनी ही खाई पर बाज नही यह आता है .

मतलब की है सारी दुनिया, कौन किसे पहचाने रे,
कौन करे अब किस पे भरोसा, हर कोई भरमाता है .

अपना दुख ही सबको लगता सबसे भारी दुनिया में,
बस अपने ही दुख में डूबा अपना राग ही गाता है .

खून के रिश्तों पर भी देखो छाई पैसे की माया,
देख के अपनो की खुशियों को हर चेहरा मुरझाता है .

कहते हैं अब सारी दुनिया सिमटी मुट्ठी में लेकिन,
सात समंदर पार का सपना सपना ही रह जाता है .

इंसा नाच रहा हैवां बन, कलयुग की कैसी छाया,
मैने जिसको अपना माना, मुझको विष वो पिलाता है .

आँख में मेरी आते आंसू, जब भी करता याद उसे,
दूर नही वह मुझसे लेकिन, पास नही आ पाता है .

इक लम्हे के लिए भी जिसने, अपना दिल मुझको सौंपा,
जीवन भर फिर याद से अपनी, मुझको क्यूँ वो रुलाता है .

मेरे पैरों में सर रख कर, दर्द की दी उसने दुहाई,
दर्द की लेकर मुझसे दवाई, मुझको आँख दिखाता है .

ये क्या हुआ मुझे न आज खुद पे इख्तियार है.
मेरे लिए भी क्या कोई उदास बेकरार है .

मेरे तो रोम रोम में बसा उसी का प्यार है,
किया है प्यार दिल ने तो वही कसूरवार है .

भुला के उसने प्यार को, गुरूर हुस्न का किया,
हमें तो इक सदी से बस उसी का इंतजार है .

महक उठी थी रूह मेरी, जब मिले थे तुम सनम,
चले गए हो तुम तो क्या खिली खिली बहार है .

है सड़ गया समाज, पाप लूट झूठ सब जगह,
न मिटने वाला हर तरफ ये घोर अंधकार है .

हवा दहक उठी मिला जो संग आफ़ताब का,
नियम ये सृष्टि का जो समझे हर जगह शुमार है .

कभी इकरार चुटकी में कभी इनकार चुटकी में ।
कनख्यों से जो देखा उसने, समझो प्यार चुटकी में ॥

कहाँ खोजोगे मतलब आज की माडर्न पेंटिंग का,
बना देते हैं आड़े तिरछे यह आकार चुटकी में ।

गधों घोड़ों में देखो हो रहा है फिर से गठबंधन,
जमाना है चुनावों का, गिरे सरकार चुटकी में ।

कभी भी जिंदगी में तुम न अब इनका यकीं करना,
सियासत में बदलते हैं सभी किरदार चुटकी में ।

जो दुनिया में बढ़ावा दे रहे आतंक के हमले,
सिखाने अब सबक उनको भरो हुंकार चुटकी में ।

अहं में भर के जिसने भी दुखाया दिल है अपनों का,
बिखरते देखे हैं ऐसे कई परिवार चुटकी में ।

दुखों के भार से है दब गया इंसान दुनिया में,
करो भक्तों का अब भगवान बेड़ा पार चुटकी में ।

हुआ है आदमी इस दौर का अब बेरहम देखो,
जो पाले, नोचता उसको ही बन खूंखार चुटकी में ।

बढ़े हैं पाप, अत्याचार इस दुनिया में अब कितने,
हे शिव अब आँख खोलो नष्ट हो संसार चुटकी में ।

दर्द औ दुख से दोनों थे मारे हुए .
एक दूजे के हम यूँ सहारे हुए .

जिसने भी की मोहब्ब्त किसी से कभी,
आसमाँ के सभी वह सितारे हुए .

हमने जिसको भी चाहा, हुआ है सितम,
चार दिन में वो रब को पियारे हुए .

बन के इक धार हम तुम बहे थे कभी,
अब है लगता, नदी के किनारे हुए .

आज आंगन में कागा था बोला सुबह,
तब से बैठी हूँ खुद को संवारे हुए .

छलके आँसू थे मीठे खुशी के कभी,
अब तो मुद्दत हुई उनको खारे हुए .

किसको है संत्रास रे जोगी .
कौन चला बनवास रे जोगी .

रब के दरस को मारा फिरता
कैसी है यह प्यास रे जोगी .

धरती ढूंढा, अंबर ढूंढा,
उसे न ढूंढा पास रे जोगी .

लाख जतन कर कर के हारा,
कैसे बुझे यह प्यास रे जोगी .

जीवन में जब तूफां आया,
डोल चला बिसवास रे जोगी .

हर पल प्रभु लीला मैं गाता,
कब आयें प्रभु पास रे जोगी .

# नज़्म

हर तरफ दुनिया में बस ताजिर हैं
ऐ मेरे मलिक मुझे भी एक काम दे दे .
रोज एक शख्स के गमों को मिटाकर
चेहरे पर तबस्सुम लाने का इनाम दे दे.

हर इंसान की है अपनी एक कहानी,
गमों के सैलाब में डूबती जिंदगानी,
जब तक बख्सी है तूने सांसों की डोर
दिलों में मोहब्ब्त जगाने का पैगाम दे दे .

रहम में आज मैं तेरे दर पे आया हूँ,
दुखियों के गमों की भर पोटली लाया हूँ,
दुनिया से सारे रंजो-अलम मिटा सकूँ
पाक कुरान का मुझे वह कलाम दे दे .

हर इंसान दूसरे पर यकीन करे,
आसमां भी जमीं से दुआ सलाम करे,
हर जिंदगी को नेमत से नवाज सकूँ
खुशियों से भरा गुलशन इनाम दे दे .

यह दुनिया एक जन्नत बन जाए,
हर कली फूल बन कर इतराए,
लोगों के दिलों में मुझे थोड़ी जगह दे दे,
मेरी इस आरज़ू को ऐ खुदा अंजाम दे दे .

# विपश्यना - धरम के दोहे

१० दिनों के विपश्यना साधना शिविर, मौनव्रत के साथ, (धम्मगिरि, इगतपुरी, महाराष्ट्र) में जाकर अभूतपूर्व शांति मिली. साधना की यह एक वैज्ञानिक पद्धति है, जो एक अति प्राचीन भारतीय पद्धति है, जिसे भगवान बुद्ध ने पुन: खोज निकाला और करोड़ों लोगों को इससे लाभ मिला. आज यह तकनीक आचार्य श्री गोयनका जी के विशेष प्रयासों से पुन : भारत में सुस्थापित हो चुकी है और विश्व के लाखों लोग इससे लाभ उठा रहे हैं. इस पद्धति पर आधारित कुछ धरम के दोहे -

1. धरम सिखाये शुद्धता, धरम सिखाये शील .
मर्यादा यह धरम की, कभी न देना ढ़ील .

2. एक धरम बस जगत में, बिलकुल सीधी राह .
मार्ग मुक्ति का दिखाये, आओ जिसको चाह .

3. कण कण ने धारण किया, धर्म प्रकृति अनमोल .
जो मानव सीखे सहज, सुख पाये अनमोल .

4. कर्ता भाव दूर रहे, मत रख भुक्ता भाव .
दृष्टा भाव प्रधान हो, चित्त रहे समभाव .

5. कण कण से निर्मित हुआ, तन का हर इक अंग .
सूक्ष्म दृष्टि से देख लो, कण कण होता भंग .

6. श्रुत प्रज्ञा ने दी दिशा, चिंतन पज्ञा ज्ञान .
जो उतरी अनुभूति पर, प्रज्ञा वही महान .

7. मैने डाले बीज जो, बने वही संस्कार .
राग द्वेष पैदा किये, बने वह चित विकार .

8. संवेदनाएं अनित्य, चित्त जगा जब बोध .
मार्ग मुक्ति के खुल गये, रहा न इक अवरोध .

9. जब से पाई विपश्यना, मिली धर्म की गोद .
चुन चुन कर विकार सभी, मन ने डाले खोद .

10. आना जाना खेल है, जो समझे वह संत .
शुद्ध धर्म धारण करे, करे खेल का अंत .

11. दुनिया भर में ढूंढ़ता, मिला न सच्चा ज्ञान .
अपने भीतर जब गया, हुआ सत्य का भान .

12. सत्य धरम बस एक है, प्रकृति नियम ले जान .
पैदा हुए विकार ज्यों, दुख का होये भान .

13. चित निर्मल हर पल रहे, रहे न एक विकार .
शुद्ध धरम की सीख यह, जो धारे भवपार .

14. धर्म बसाया चित्त में, सोचा कभी न पाप .
धर्म खिलाए गोद में, कभी न हो संताप .

15. धन्य गुरू की सीख है, धन्य गुरू के बोल .
चित निर्मल ऐसा किया, दिया धर्म अनमोल .

16. रोम रोम कृतज्ञ हुआ, मिला गुरू का ज्ञान .
देख देख संवेदना, परम सत्य का भान .

17. शील, समाधि, प्रज्ञा की, बही त्रिवेणी धार .
स्व वेदन अनुभव किया, निकले सभी विकार .

18. सब धर्मों को खोजता, पढ़ डाले सब ग्रंथ .
शुद्ध धर्म धारण किया, हो गय सच्चा संत .

19. बात धर्म की सब करें, धारण करे न कोय .
जो इसको धारण करे, दुख काहे को होय .

20. अनुभव कर संवेदना, धरम है यां विज्ञान .
भावमयी प्रज्ञा करे, जन जन का कल्याण .

21. धम्म सेवकों की सेवा, चढ़ी यहां परवान .
धम्म खुद धारण किया अब, औरों का कल्याण .

# सामाजिक दोहे

1. मधुर प्रीत मन में बसा, जग से कर ले प्यार .
जीवन होता सफल है, जग बन जाये यार .

2. मधुर मधुर मदमानिनी, मान मुनव्वल मीत .
मंद मंद मोहक महक, मन मोहे मनमीत .

3. नन्हा मुझे न जानिये, आज भले हूं बीज .
प्रस्फुटित हो पनपूंगा, दूंगा आम लजीज .

4. पढ़ लिख कर सच्चा बनो, किसको है इंकार .
दुनियादारी सीख लो, जीना गर संसार .

5. संसारी संसार में, रहे लिप्त संसार .
खुद भूला, भूला खुदा, भूले नहि परिवार .

6. गीत आज गुनगुना के, छेड़ो दिल के तार .
दिल में घर बसा लो तुम, मुझे बना लो यार .

7. कवि फक्कड़ महान हुए, ऐसे संत कबीर .
फटकार लगाई सबको, बात सरल गंभीर .

8. नाम हरी का सब जपो, कहें सदा यह सेठ .
ध्यान भला कैसे लगे, खाली जिनके पेट .

9. सच की अर्थी ढ़ो रहा, ले कांधे पर भार .
पहुंचाने शमशान भी, मिला न कोई यार .

10. देश को नोचें नेता, बन चील गिद्ध काग .
बोटी बोटी खा रहे, कैसा है दुर्भाग .

11. लालच में है हो गया, मानव अब हैवान .
अपनों को भी लीलता, कैसा यह शैतान .

12. रावण रावण जो दिखे, राम करे संहार .
रावण घूमें राम बन, कलयुग बंटाधार .

13. मर्यादा को राखकर, बेच मान अभिमान .
कलयुग का है आदमी, धन का बस गुणगान .

14. मैं मैं मरता मर मिटा, मिट्टी मटियामेट .
मिट्टी में मिट्टी मिली, मद माया मलमेट .

15. छल कपट लूट झूठ सब, चलता जीवन संग .
सच पर अब जो भी चले, लगे दिखाता रंग .

16. सांप छछूंदर नेवला, किसमें ज्यादा जहर।
हार मानी तीनों ने, आदम देखा शहर ॥

17. कलयुग में मैं ढ़ो रहा, लेकर अपनी लाश ।
सत्य रखूँ यां खुद रहूँ खुद का किया विनाश ॥

18. भगवन सुख से सो रहा, असुर धरा सब भेज ।
देवों की रक्षा हुई, फंसा मनुज निस्तेज ॥

19. मैं मैं मरता मर मिटा, मिट्टी मटियामेट ।
मिट्टी में मिट्टी मिली, मद माया मलमेट ॥

# मुक्तक

1. न्याय बिकता है तराजू तोल ले,
हृदय की संवेदना का मोल ले,
हर तरफ है रुपया आज बोलता,
बेचने अपनी पिटारी खोल ले.

2. बचे थे जो चार गांधी चुक गये,
सत्य अहिंसा पुस्तकों में छुप गये,
हिंदुस्तां की अस्मिता को बेचने
सौदागर ही हर तरफ बस रह गये .

3. अर्चना से देवता अब डर रहे,
सुन मनुज की मांग कंपन कर रहे,
निज खुशी की है नही चिंता उसे,
दूसरे की हानि का प्रण कर रहे.

# हाइकु

1. जिंदगी एक
गमों का है दरिया
बस तैरिये !

2. बेटी का जन्म
घर मे है मातम
पराया धन !

3. गरीबी पाप
मौत से बदतर
जीना दुश्वार !

4. सच की राह
चलना है मुश्किल
कांटो से भरी ।

5. निराशा छायी
उजाले छिप गये
क्षितिज तक ।

6. स्वप्न सजाओ
दिल को बहलाओ
क्या जाता है ?

7. हसरत है
तुम्हारी चाहत की
मिलो न मिलो !

8. दिल का दर्द
दिल वाले ही जाने
बिछुड़ कर ।

9. अपनी धरा
बिछुड़ कर रोता
माँ तुल्य गोद ।

10. क्रूर इंसान
विलुप्त संवेदना
गला काटता ।

11. भली लगती
प्यार मे इसरार
इंतजार है ।

12. कभी तो मिलो
अपना कह कर
गर्मजोशी से ।

13. जमीं बिछुड़ी
अपना किसे कहें
घरौंदे ढ़हे ।

14. परदेश है
गाली भी दें तो किसे
अपना कौन ?

15. दिली जज्बात
नम हो गयी आँखे
याद जो आयी ।

16. अश्क बहाऊँ
कौन भला अपना
पोंछेगा कौन ?

17. अंकुर फ़ूटा
प्रकृति का संदेश-
नवजीवन ।

# माहिये

1. साजन कब आयेंगे
देख रही कबसे
हम पलकें बिछायेंगे .

2. है प्यार बसा आँचल
छाँव है माँ ममता
दुनिया से बचा ले हर पल .

3. जब से है तुझे देखा
दिल न रहा अपना
सांसों ने दिया धोखा .

4. है भाग रही दुनिया
धन के लिये पागल
भूली अपनी मुनिया .

5. रिश्तों की जला होली
नाच रहा नंगा
अपनों पे चला गोली .

6. आँसू न बहा अपने
कौन भला पोंछे
माँ, बाप नही अपने .

7. अनमोल हैं यह मोती
यूँ न बहा आँसू
हर बात पे क्यों रोती .

8. करना न भरोसा तुम
अक्श भी है झूठा
उल्टे का है सीधा भ्रम .

9. वर्षा ऋतु जब आती
छम छम जल लाती
तन मन को भिगो जाती .

10. सावन में पड़े झूले
आ के बढ़ा पींगें
सब मिल के फलें फूलें .

11. लहरें वो जो आयी थीं
खत्म किया सब कुछ
कहते हैं सुनामी थीं .

12. चालें चल जाते हैं
डेढ़ सयाने जो
सीधों को हराते हैं .

13. सपनों को सजाते हैं
दिल में छुपा के दुख
हर पल मुसकाते हैं .

14. राधा के हैं वो कान्हा
सुर बिखरे मीठे
धुन मुरली बजा जाना .

15. दुनिया में किया हर छल
पाप भरा मटका
दुख झेल रहा प्रतिपल .

16. साजन घर आये हैं
पी जो मिले मुझको
सुध बुध बिसराए हैं .

17. दीदार हुए रब के
अब है किसे पाना
बलिहार गया सद के .

18. तेरा मुझसे नाता
दर्द का है रिश्ता
संग आँसू बहा जाता .

19. फूलों पर हैं भंवरे
चाह रहे पीना
मधु रस सब हंस हंस के .

20. खामोश हैं दिलबर क्यों
राज है कुछ लगता
गहरे हैं छिपाए ज्यों .

21. लालच न मिटे दिल से
पांव है इक कब्र में
दिन रात गिने पैसे .

22. रब को भज ले बंदे
फिर न मिले मौका
सब काम मिटा गंदे .

23. करतूत है आदम की
शर्म से गड़ जातीं
नज़रें परमातम की .

24. मिट्टी के बने हैं घर
खोखले हैं इंसां
गिर जाते हैं भुर-भुर कर .

25. आदम है गिरा इतना
नोच रहा बन गिद्ध
शैतान बना कितना .

26. है आग लगी जन्नत
दिख न रहा धुआं
इंसां है हुआ उन्नत .

27. ज़िंदों को हैं खा जाते
आज के यह इंसां
कागा हैं लजा जाते .

28. फूलों से मिला धोखा
यार बनाने को
कांटों को है अब रोका .

29. बेटे का बसाने घर
कुदरत भी कांपी
बेटी का उजाड़ा घर .

30. बर्बाद किया मुझको
कांप रही धरती
रब क्या दे सज़ा उनको .

31. देखी है इबादत जब
देखना है हमको
उसका तो करिश्मा अब .

32. मिलती है खुशी ऐसे
मिलकर अपनों से
मिसरी हो घुली जैसे .

33. दिलबर हैं मेरे आते
जा के ले आऊँ मैं
धुन गीत मधुर गाते .

34. विस्मित कर दूँ उनको
हो के खुशी पागल
लिपटा लेंगे वह मुझको .

35. चाहो जो मिलें खुशियाँ
दुख न किसी को दो
बाँटो हर पल खुशियाँ .

36. बरखा ऋतु फिर आई
जीवन में सबके
है ले के बहार आई .

37. मेघा हैं घने छाये
नीर बहा छम – छम
मिट ताप धरा जाये .

38. है चांद खिला पूनम
आग लगी शीतल
साजन बिन आँखे नम .

39. हैं फूल खिले गुलशन
संग कली गाये
मुस्कान धरा हर जन .

40. झोंका है हवा आया
गाँव की मिट्टी की
खुशबू भर के लाया .

41. है चांद घिरा बादल
लुक छिप है खेले
पल देख के हो ओझल .

42. सोंधी खुशबू मिट्टी
फूल खिले मन में
साजन की मिली चिट्ठी .

43. क्यों रूठ गया चंदा
राज कहूँ किससे
है टूट गई तंद्रा .

44. सहरा है बना गुलशन
इक थी यहाँ बस्ती
उजड़ा है हुआ हर मन .

45. घनघोर चली आँधी
तरु हैं लगे गिरने
लो देख लो बरबादी .

46. आया है दशहरा फिर
रावण मारेंगे
क्यों दुष्ट हैं आते फिर .

47. आह्वान करो दुर्गा
फैले असुर धरती
संहार करो सबका .

48. माँ नाश करो दुर्जन

कितने अधम पापी

जीना है कठिन सज्जन .

49. जन्मा फिर भष्मासुर

नीच कुटिल दानव

काटो धड़ रजनीचर .

50. भगवान बसे कण कण

मन में हो गर आस्था

पाओगे उसे जन जन .

51. स्वीकार करो काली

भेंट असुर मुण्डन

पी रक्त लो भर प्याली .

52. प्रह्लाद ने पाया जब

ध्रुव ने भी पाया है

मुझको भी मिलेगा रब .

53. नव भोर भई नभ में
छोड़ उदासी अब
जीवन फिर जी सच में .

54. बरबाद किया जीवन
भाई ने बहना का
क्या सब कुछ ही है धन .

55. बन साँप हैं डस लेते
पहलू में छिपे बैठे
अपने ही हैं जां लेते .

56. इंसां को बनाये रब
कर्म करें अच्छे
निर्वाण पा जायें सब .

# निकुंज : समीक्षा (1)

## विज्ञान के कविता होने का अर्थ है कवि कुलवंत सिंह

कविता विज्ञान नही होती, लेकिन विज्ञान के साथ चले तो इसका व्यक्तित्व कुहरे में खिली धूप की तरह आकर्षक होता है - कवि कुलवंत सिंह की कविताओं को पढ़कर यही कहना ठीक होगा. 'निकुंज' ७७ कविताओं का संग्रह है, जो कविताएं कुलवंत सिंह के संवेदनशील मन और आलोचक मस्तिष्क की धाराओं से मिलकर बनी कविताएं हैं, जो समकालीन हिंदी कविताओं के लिए रसायन की तरह हितकारी हैं. हितकारी इस अर्थ में कि आज की कविताएं किस तरह व्यक्त होकर और क्या कहकर अपने अस्तित्व को बचाए रख सकती हैं, इसका संदेश यां मंत्र इन कविताओं में व्याप्त और बिखरा हुआ है. यह सही है कि आज हम जिस परिवेश में जी रहे हैं,

जिंदगी कदाचित जिसमें अपनी
अंतिम घुटी सांसे ले रही है / जहां
नि:शब्द / रात्रि की नीरवता/स्याह काले
अपने दामन में/लपेटे हुए है-एक टीस (अंतिम सांसे पृ.९३) लेकिन
कवि कुलवंत इसी में घुटकर नही रहते, एक सुलझे

वैज्ञानिक की तरह रात्रि की नीरवता के कारण और उससे मुक्ति के रहस्यों को खोलते भी हैं और तब इनकी कविताएं भी कालिखपुती भाषाओं में व्यक्त कुंठाओं और और बडबोलेपन की आधुनिक कविताओं का साथ छोड़कर साहित्य के मंगलमय रहस्य लोक से जुड़ जाती हैं. कुलवंत सिंह की कविताएं अंधकार के पेट में रोशनी का सतंभ हैं, जिसमें पूरी दुनिया के लिए ममता है, रोशनी है. इनकी कविताओं का यह वैष्णव व्यक्तित्व उनकी कविताओं में एकदम खुलकर भी सामने आ जाता है,

जीवन को न बांधिए / नियमों से / उसूलों से -
जीवन तो इत्र है / इसको दीजिए महकने (निर्झर ८७)
डूबते सूर्य को देखा.... / डूबते डूबते भी / रश्मियां /
बिखराता जाता / महापुरुषों - सा / कुछ देकर जाता
(सूर्यास्त पृ ८९)

अगर आपत्ति न लगे तो कुलवंत सिंह के कविता संग्रह 'निकुंज' के लिए एक पंक्ति में कहना चाहूं तो कहूंगा कि आज के उबलते परिवेश के महाभारत के बीच दिशाहीन, मतिभ्रम निस्तेज अर्जुनों के समक्ष पढ़ी गई नई 'गीता' है, जिस गीता का मूल्यांकन, काव्यशास्त्र की शब्दशक्ति, रीति-गुण, ध्वनि, और रस की जमीन पर नहीं, उसमें व्यक्त वृहत्तर जीवन दृष्टि के

आधार पर होता है, वैसे कवि कुलवंत सिंह का 'निकुंज' काव्य की ध्वनि को भी समझता है, रीति- गुण की शैली को भी, और शायद बेहतर ढ़ंग से - यही कारण है कि कथ्य के बदलते ही कविता की शैली भी उसी रंग में बदल जाती है. कवि का यह 'निकुंज' किसी एक खास रसवादी का घर नही है, रसों का रास है इस काव्यशाला में - भावों के जितने छोटे बड़े रंग हो सकते हैं - 'निकुंज में सब साथ हैं. अगर ठीक से 'निकुंज' के स्वर को पकड़ने की कोशिश करें तो हमें हिंदी काव्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल के नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल तक की कविताओं के स्वर गूंजते मिलेंगे. लेकिन सारे स्वरों में एक स्वर सबसे अधिक मुखर है, और वह यह -

आओ खोजें इक नई दुनिया को

जिसमें तुम तुम न रहो, मैं मैं न रहूं बस हम रहें

(नई दुनिया पृ ५०)

हिंदी की समकालीन कविता में यह कुछ अलग सा स्वर है, जो आज की कविताओं में दुर्लभ हो गया है, और जो कवि कुलवंत सिम्ह में आकाशदीप की तरह उठता है.

समीक्षक : डा. अमरेंद्र;

संपादक, 'वैखरी'

# निकुंज : समीक्षा (2)

## आत्मीय संवाद बनाती कविताएं

समय के इस भयावह दौर में जब बाजार तंत्र ने आदमी के संवेदना जगत को क्षत-विक्षत करते हुए उसे एक खंडहर में तब्दील कर दिया हो, जहां केवल खुदगर्जी का आलम चरम पर हो, जहां महज औपचारिक्ताएं ही शेष रह गई हों, जहां केवल निजी स्वार्थ हेतु युद्ध लड़े जा रहे हों, जहां शाश्वत मूल्यों की जमीन लगातार छोटी होती जा रही हो, जहां हत्याएं, बलात्कार की भीषण आंधियां चल रही हों ऐसे विद्रूप समय में एक मुक्त कवि श्री कुलवंत सिंह की कविताओं को पढ़ते हुए राहत मिलती है. वह उन तमाम अव्यवस्थाओं, खामियों के प्रति ही नही बल्कि इंसान और इंसानियत को खत्म कर देने वाली प्रवृत्तियों के खिलाफ, कृति और प्रकृति की दुश्मन बनती जा रही उन तमाम कारकों के खिलाफ उठ खड़ा होता दिखाई देता है और यह शुभ संकेत भी है. वह कम से कम शब्दों का प्रयोग करते हुए एक ऐसा रचना संसार खड़ा करता है, जहं भटकों को, दु:खी प्राणियों को राहत मिलती दिखाई देती है.

वह अच्छी तरह जानता है कि परिवर्तन एक सास्वत प्रक्रिया है, एक शाश्वत सत्य है जो किसी भी कीमत पर किसी के द्वारा रोका नही जा सकता. इस परिवर्तन शीलता के दौर में जाहिर है कि आदमी भी बदलेगा. कवि इस बदलाव को लेकर चिंतित है.

उसकी चिंताओं में कुछ प्रश्न सहज रुप से आ खड़े होते हैं. वह प्रश्न करता है कि क्या चांद सूरज धरती भी बदल रहे हैं? जब वे नही बदल पा रहे हैं तो तुम इस प्रवाह की लपेट में आने से क्या अपने आप को बचा नहीं पा रहे हो. प्रकृति का जरा सा भी बदलाव हमारे लिए जीने मरने का प्रश्न बन जाता है. अत: बदलाव किस काम क जो औरों का जीवन खतरे में दाल दे. फिर हमारे अपने क्या आदर्श होने चाहिएं, आदि पर एक कवि मैन रहने के बजाए मुखर होकर अपनी बात हमारे समक्ष रखता है.

संग्रह में एक नही कई ऐसी कविताएं हैं जो हमारे जीवन के साथ सूक्ष्मता से जुड़ी हैं, एवं उनके प्रति यां तो हम घोर लापरवाह हो गये हैं, यां उन्हें द्गीरे धीरे त्यागते चले जा रहे हैं, कवि ने बड़ी बेबाकी से इन पर अपनी कलम चलाई है. कवि का एक उजला पक्ष और है जिस पर सायद ही किसी की नजर पड़े और वह है संग्रह का वह समर्पित भाव जिसमें अपने माता-पिता तथा आचार्यों को देवरूप मान कर स्तुति की है. और इन्हें ही अपना आराध्य मान कर काव्याम्जलि अर्पित की है. निश्चय ही यह विनीत भाव उन्हें रजकण से विराटता प्रदान करता है, इसके लिए जितनी भी तारीफ की जाए संभवतह : वह कम ही पड़ेगी.

आई आई टी रुड़की से इंजीनियरिंग में बी. ई. करने तथा एक वैज्ञानिक अधिकारी होने के बावजूद श्री कुलवंत सिंह का रुझान

कविताओं में है, साहित्य में है, तो यह हम लोगों का परम सौभाग्य है कि ऐसे ऊर्जावान कवि को हमारे बीच में पाकर हम गदगद हुए बिना नही रह सकते.

कविता मानसिक विलासिता की चीज नही है. वह सामाजिक अपरिवर्तन के औजार का काम करती है.नि:सम्देह उनकी कविताओं का पुरजोर असर पाठकों पर पड़ता है. एक बात और कह देने में मैं अपने आप को रोक नही पा रहा हूँ, और वह यह कि कविता दरअसल उसकी भाषा के सौंदर्य में होती है, कथ्य की संवेदनाओं में होती है, इसलिए कविताओं पर की गई टिप्पणी, उसकी समीक्षा यां आलोचना अपर्याप्त है. कविता अपनी संपूर्ण उपस्थिति में ही आस्वाद से अपना वाजिब और आत्मीय संवाद बना सकती है. आपकी कविताओं में मुझे काफी कुछ मिला है जिसका वर्णन महज़ अल्फाज़ों में संभव नही. एक अच्छे संग्रह के लिए मेरी बधाईयां शुभकामनाएं स्वीकारें. भविष्य में और भी नायाब चीजें पढ़ने को मिलेंगी.

इन्ही आशाओं और विश्वास के साथ

गोवर्धन यादव

अध्यक्ष, म. प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

जिला इकाई, छिंदवाड़ा, म. प्र.

# चिरंतन : समीक्षा (1)

## कुलवंत सिंह का मूल भाव उदभोधन है

श्री कुलवंत सिंह की कविताएं पढ़कर यां सुनकर ऐसा नही लगेगा कि यह कोई वैज्ञानिक अधिकारी होंगे. क्योंकि विज्ञान के क्षेत्र में पदार्थ विज्ञान की सर्वोन्नत विधा से यह जुड़े हुए हैं . भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र से. जो संवेदनशीलता इनकी रचनाओं में मिलती है, प्रकृति के सौंदर्य को देखने की जो दृष्टि इनके गीतों में है, सबको सुखी देखने की लालसा इनके उद्दात मन में है और परपीड़ा और विकृत होती मानव संस्कृति के प्रति जो आक्रोश इनमें देखने को मिलता है, वह बहुत ही घनघोर, दृष्टाव्य और हृदयग्राह्य हैं. उदाहरण के लिए छुपा कहां भगवान रचना में कुलवंत सिंह भगवान को ललकारते हैं –

तार तार हुआ समाज,
मनुज बन गया हैवान,
अंधाधुंध सब भाग रहे,
मंजिल का नही ज्ञान,
गमों में सब जी रहे,
खुशी का न नामों निशान,

छुपा कहां भगवान.

प्रकति का वर्णन –

कन कन बरखा की बूंदे,
वसुधा आंचल भिगो रहीं,

बेटी जन्म के प्रति सामाजिक कुसंस्कार –

माँ को कोसा बेटी के लिए जाता,
तानों से जीना मुश्किल हो जाता,
गला घोटकर यां जिंदा दफना दिया जाता.

कुलवंत सिंह प्रतारणा ही नही उदभोधन के भी कवि हैं –

क्षुब्ध उदास मन हर्षित कर लो,
क्षीण हृदय स्पंदित कर लो,
आघात भूल सहज हो लो,
संगीत प्रकृति का बिखरा सुन लो.

और यह –

कुछ अशोक, चंद्रगुप्त, अकबर बन देश को जोड़ जाते हैं कुछ
औरंगज़ेब, मीरजाफ़र, जयचंद बन देशको तोड़ जाते हैं

और आज का युगीन विरोधाभास –

आज के युग में कितनी तरक्की है,
ट्रेनें. हवाई जहाज सड़क पक्की है,

राकेट मिसाईल कारें सितारा होटल हैं,

और

नजरें उठा कर देख लो किसी भी शहर गली में,

कचरे के डब्बों से खाना ढूंढता आदमी,

'हिंदी' कविता कुलवंत सिंह की नई कविता है. लेकिन भावना के स्तर पर वह गीत के समान प्रभावी है –

बाग की बहार है,

राग में मल्हार है,

हिंदी हमारा प्यार है,

इस प्रकार कवि कुलवंत सिंह जो भी लिखते हैं वह सोद्देश्य होता है. वह यह कि समाज को अपसंस्कृति के प्रभाव से, सामाजिक बुराइयों से मुक्त होने का आह्वान करते हैं. ऐसा नहीं कि वह विज्ञान की महत्ता को नही मानते, अपनी कविता एटम और भगवान में वह कण कण में बसता भगवान कहते हैं और यह भी कि जन जन में बसता भगवान, समझें तो बहुत गहरी बात कह गये कवि कुलवंत सिंह. भगवान की सर्वत्रता को बता दिया उन्होंने मगर कण से भी छोटे एटम का परिचय कराते हुए उन्होंने उसमें छिपी शक्ति का अहसास दिलाया है –

एटम खुद है छोटा इतना,
नाभिक का तो फिर क्या कहना,

लेकिन इसे विखंडित करके,
मिलती ऊर्जा चाहो जितना,

इन शब्दों से मनुष्य की सामर्थ्य को भी कवि, भगवान की सर्वत्रता के साथ स्थापित करता है. और यह सब तो

अभी इस कवि की शुरुआत है. इन्ही गहराइयों के अतल वितल में डुबकी लगाने की उनकी यह प्रतिभा उन्हें बहुत आगे ले जायेगी.
जब कुलवंत सिंह ने मुझे अपनी कविताओं के लिए कुछ शब्द लिखने को कहा तो मैने चूंकि उन्हे सुना था इसलिए हां कह दी थी और साथ में कुछ कविताएं दे जाने के लिए कहा था. मैने उनकी पांडुलिपि पढ़ी उसके बाद जैसा समझा लिख दिया.

नंद किशोर नौटियाल
अध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी
संपादक, नूतन सवेरा

# चिरंतन : समीक्षा (2)

## शुभाशंसा

कवि कुलवंत सिंह जिन परिस्थितियों में रहकर काव्य साधना करते हैं वह कविता के लिए नितांत प्रतिकूल हैं. इसके बावजूद ये अगर निरंतर आगे बढ़ रहे हैं और एक पर एक संग्रह हिंदी वांग्मय को दे रहे हैं तो यह इनके जीवट होने का हों प्रमाण है.

श्री सिंह का नया काव्य संग्रह 'चिरंतन' आज के संदर्भों पर एक जीवंत काव्यात्मक टिप्पणी है. 'राम सेतु' में इन्होंने बड़ी अच्छी बात कही है कि राम हमेशा वर्तमान हैं. वे कभी इतिहास नही हो सकते. इसी तरह 'कोख से' में घर की बेटियों का बहुत ही कारुणिक चित्रण किया है. इन्हे नख शिख का शृंगार भी आकृष्ट करता है. क्योंकि हर युग में जीवन का वह भी एक महत्वपूर्ण पक्ष है. 'प्रकृति' में इन्होंने सदाबहार प्रकृति का बड़ा ही मनोरम दृष्य उपस्थित किया है.

श्री कुलवंत सिंह मुंबई जैसे मायानगर में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र जैसे महत्वपूर्ण कार्यालय में

वैज्ञानिक अधिकारी हैं. इसके बाव्जूद साहित्य के प्रति जन्मजात लगाव के कारण ही ये अपने प्रथम संग्रह निकुंज से निकलकर चिरंतन तक आ पहुंचे हैं.

मैं श्री कुलवंत जी को इस अवसर पर बधाई देता हूंऔर आशा करता हूं कि भविष्य में भी वह इसी प्रकार नये नये काव्य संग्रहों से सरस्वती का भंडार भरते रहेंगे.

मेरी अमित शुभकामनाएं.

डा. बुद्धिनाथ मिश्र
मुख्य प्रबंधक राजभाषा
आयल एण्ड नेचुरल गैस कार्पोरेशन लि
देहरादून